



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 64]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, फरवरी 13, 2014/माघ 24, 1935

No. 64]

NEW DELHI, THURSDAY, FEBRUARY 13, 2014/MAGHA 24, 1935

रक्षोपाय महानिदेशालय

(सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क)

रक्षोपाय जांच शुरुआत का नोटिस

नई दिल्ली, 13 फरवरी, 2014

[सीमाशुल्क प्रशुल्क (रक्षोपाय की पहचान एवं आकलन) नियम, 1997 के नियम 6 के अंतर्गत]

विषय :- कार्बन चैन लैंगथ के सी 8, सी 10, सी12, सी14, सी16 और सी18 के सैचुरेटिड फैटी अल्कोहल्स जिसमें एकल मिश्रित और गैर मिश्रित (इसमें ब्रान्डेड आइसोमर शामिल नहीं हैं) और कार्बन चैन लैंगथ अर्थात् सी12-सी14, सी12-सी16, सी12-सी18 और सी14-सी16 के सम्मिलन के मिश्रण शामिल हैं (सी12-सी14 के रूप में सामान्य रूप से श्रेणीबद्ध) (जिन्हें यहां पीयूसी के रूप में संदर्भित किया गया है) के भारत में आयात के संबंध में रक्षोपाय जांच शुरू किया जाना।

सा.का.नि. 87(अ).—सीमाशुल्क (रक्षोपाय शुल्क की पहचान एवं आकलन) नियम 1997 के नियम 5 के अंतर्गत मैसर्स वीवीएफ इंडिया लिमिटेड, मुम्बई, एक 100 प्रतिशत निर्यातोन्मुख इकाई द्वारा अपने कन्सल्टेंट मैसर्स टीएलसी लीगत एडवोकेटस, नई दिल्ली के माध्यम से एक आवेदन का कार्बन चैन लैंगथ के सी 8, सी 10, सी12, सी14, सी16, और सी18 के सैचुरेटिड फैटी अल्कोहल्स जिसमें एकल मिश्रित और गैर मिश्रित (इसमें ब्रान्डेड आइसोमर शामिल नहीं हैं) और कार्बन चैन लैंगथ अर्थात् सी12-सी14, सी12-सी16, सी12-सी18 और सी14-सी16 के सम्मिलन के मिश्रण शामिल है (सी12-सी14 के रूप में सामान्य रूप से श्रेणीबद्ध) (जिन्हें यहां पीयूसी के रूप में संदर्भित किया गया है) के भारत में आयात के संबंध में मेरे समक्ष दायर किया गया है जिससे भारत में इस "पीयूसी" के सर्वाधिक आयातों द्वारा इस "पीयूसी" के घरेलू उत्पादकों को कारित की जा रही

गंभीर क्षति/गंभीर क्षति की चुनौती से रक्षा की जा सके। इस पीयूसी का आयात सीमा शुल्क अधिनियम, 1975 के उपशीर्षक 38237010, 38237020, 38237040, 38237090 और 29051700 के अंतर्गत आयात किया जा रहा है। तथापि वह वर्गीकरण केवल संकतात्मक है और वह किसी भी तरह से वर्तमान जांच के दायरे पर बाधकारी नहीं है।

2. घरेलू उद्योग: मैसर्स वीवीएफ (इंडिया) लिमिटेड, मुम्बई ने दावा किया है कि उनका उत्पादन देश में इस 'पीयूसी' के कुल उत्पादन का 63 प्रतिशत है और यह देश में इस पीयूसी के भारतीय उत्पादन का एक बड़ा अनुमान करता है और इस कारण वर्तमान याचिका दायर करने का उनका आधार बनता है। आवेदक के अलावा इस सम्बद्ध वस्तु का उत्पादन मैसर्स गोदरेज इंडस्ट्रीज लिमिटेड, मुम्बई इस मामले में (सहायक) द्वारा भी किया जा रहा है।

3. अंतर्ग्रस्त उत्पाद: वसीय अल्कोहल्स लबिफैट्रिक अल्कोहल्स होते हैं और वे सैचुरेटेड तथा अनसैचुरेटेड दोनों रूपों में पाये जाते हैं अल्कोहल्स को समूहबद्ध किया जा सकता है और उनकी सर्वाधिक सामान्य लम्बाई सी12, सी14 और उनका ब्लेण्ड होती है। इस "पीयूसी" का उत्पादन प्राकृतिक वसा एवं तेलों, अधिकांशतः नारियल एवं पामगिरी का तेल का परिवर्तन करके मिथायल ईस्टर या मोम ईस्टर का तनकरण करके किया जाता है। यह प्रक्रिया कूड पाम का तेल आयल जैसे वैजीटेबल तेलों का उच्च ताप और दाब में वियतण्डन करके प्रारंभ होते हैं और यह प्रक्रिया एक सतत प्रक्रिया के रूप में चलती है। वैजीटेबल अक्स/पोट्स (अरवादा) मूलतः फैटभू सीसिड्स ट्रिग्लाइसिराइड्स होते हैं जिन्हें हाइड्रोक्सीसय अनुक्रिया द्वारा जिसे सामान्यतः वसा विखंडन के रूप में जाना जाता है, फैटी एसिड्स और इलायसरोल में परिवर्तित किया जाता है। फिर इस कूड फैटी एसिड्स का उच्च ताप और निर्णत में सामान्य/फ्रैक्शनल आयतन किया जाता है। उसके बाद, इनर्ट वातावरण में इन फैटी एसिड्स और फैटी अल्कोहल्स के बीच अनुक्रिया करके वैक्स ईस्टर बनाने के लिए उसका ईस्टरीकरण किया जाता है। तब, शुद्ध वैक्स ईस्टर का हाइड्रोजनीकरण किया जाता है जो फिवस्ड रोड कायर केटालिस्ट की मौजूदगी में होता है जिससे कूड फैटी अल्कोहल बनता है। फिर इसका आयातन एवं शुद्धीकरण किया जाता है। इस पीयूसी की बिक्री फ्लेक्स पेस्टिल्स और तरल रूप में की जाती है।

इस विचाराधीन उत्पाद का प्रयोग मुख्यतः सरफैकोट्स व्यक्तिगत देखभाल होमकेयर फार्मास्युटिकल्स और कृषि संबंधी अंतिम अनुप्रयोगों का विनिर्माण करने, चमड़ा, वस्त्र, फर, पल्प कायज पेट्रोलियम उत्पादों फाइन कैमिकल्स रबड़ उत्पादों, प्लास्टिक और फोबकेटिड धातु उत्पादों की प्रासेसिंग करके, जिसमें खनन शामिल है, आमतौर परचालनों, विनिर्माण कार्य के लिए तथा डिग्रीजिंग प्रयोजनों हेतु साल्वेंट के रूप में किया जाता है। इस उत्पाद की खुदरा बिक्री नहीं की जाती है और यह केवल औद्योगिक उपयोग के लिए होता है।

4. जांच की अवधि (पीआईओ): आवेदक ने वर्तमान आवेदन के प्रयोजनार्थ चार वर्षों की अवधि के आंकड़ों पर विचार किया है। आवेदक ने वर्ष 2010-11 से वर्ष 2013-14 (दिसम्बर, 2013) तक के आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। चयन की गई जांच की अवधि 2010-11 से 2013-14 (वार्षिकीकृत) है जो बजट की स्थिति पर विचार करने और रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण करने की जरूरत का निर्धारण करने के लिए काफी दीर्घ अवधि है।

5. सूचना का स्रोत: इस विचाराधीन उत्पाद के वर्ष 2010-11 से दिसम्बर, 2013 तक के आयात आंकड़े आई बी आई एस, मुम्बई (सौदवार) से लिए गए हैं और विश्लेषण के लिए उन्हीं पर विचार किया गया है। वर्ष 2010-11 से वर्ष 2013-14 (दिसम्बर, 2013 तक) तक के घरेलू आंकड़े घरेलू उद्योग दायर प्रस्तुत किए गए हैं और उनका इस विभाग द्वारा स्थल दौरा करके जारी समझी गई सीमा तक सत्यापन किया गया है और क्षति विश्लेषण के लिए इन सत्यापित आंकड़ों पर ही विचार किया गया है।

6. संवर्धित आयात (समग्र एवं संयंत्र रूप से) : इस विचाराधीन उत्पाद का भारत को कई देशों से और प्राथमिकता मलेशिया, थाइलैंड और इंडोनेशिया से आयात किया जाता है। इस विचाराधीन उत्पाद के आयात में समग्र एवं संगत दोनों रूपों में बढ़ने की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। वित्त वर्ष 2010-11 से 2013-14 (वार्षिकीकृत) तक के दौरान इस विचाराधीन उत्पाद का आयात निम्नलिखित रहा:—

आयात एवं प्रवृत्ति

2010-11	2011-12	2012-13	2013-14(दिसम्बर 2013 तक)	2013-14 (वार्षिकीकृत)
19843	34142	51055	39442	52589
100	172	257	198	265

आयात जो कि वर्ष 2010-11 में 19843 मी.टन से बढ़कर वर्ष 2013-14 में 52589 मी.टन (वार्षिकीकृत) हो गया है आधार वर्ष की तुलना में संपूर्ण टर्म और पिछले वर्ष अर्थात् 2012-13 के साथ तथा संगत सापेक्षिक टर्म में आधार वर्ष दोनों से बढ़ता हुआ रुझान दिखाता है।

6.(क) उत्पाद के संबंध में आयात :

वर्ष 2010-11 से 2013-14 वार्षिकीकृत की अवधि के दौरान उत्पादन के संबंध में आयातों का बाजार प्रतिशत 17 प्रतिशत से बढ़कर 36 प्रतिशत हो गया जो निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट है:—

वित्त वर्ष	कुल आयात (मी.टन)	अखिल भारतीय उत्पादन (मी.टन)	उत्पादन की तुलना में आयातों का %
2010-11	19843	118582	17
2011-12	34142	96344	35
2012-13	51055	112613	45
2013-14 (वार्षिकीकृत)	52589	147701	36

7. क्षति: आवेदक ने दावा किया है कि इस विचाराधीन उत्पाद के सर्वाधिक आयात इस विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उत्पादकों को क्षति कारित कर रहे हैं और गंभीर क्षति कारित करने की चुनौती उत्पादन कर रहे हैं जैसा कि निम्नलिखित कारकों से संकेत मिलता है:

(क) उत्पादन: आधार वर्ष 2010-11 की तुलना में घरेलू उद्योग के उत्पादन में वर्ष 2011-12 में आई गिरावट और वर्ष 2010-11 में इसका उत्पादन 68605 मी.टन था जो कम होकर वर्ष 2012-13 में 67837 मी.टन रह गया, परंतु इसने वर्ष 2013-14 में (वार्षिकीकृत) बढ़ने की प्रवृत्ति दर्शायी है।

वर्ष	मात्रा (मी.टन) अनुकृत
2010-11	68605
2011-12	49585
2012-13	67837
2013-14 (वार्षिकीकृत)	98648

(ख) घरेलू मांग में घरेलू उत्पादकों का हिस्सा:—घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भारी गिरावट आई है। आवेदक का वर्ष 2010-11 में 38 प्रतिशत बाजार हिस्सा था जो वर्ष 2013-14 (वार्षिकीकृत) के दौरान 21% रह गया। उसी अवधि के दौरान आयातों का बाजार हिस्सा वर्ष 2010-11 में 44 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2013-14 में (वार्षिकीकृत) 69 प्रतिशत हो गया।

वित्त वर्ष	कुल आयात (मी.टन)	घरेलू उद्योग की बिक्री (मी.टन)	अन्य भारतीय उत्पादों की बिक्री (मी.टन)	कुल योग (मी.टन)	बाजार हिस्सा (%)	
					घरेलू उद्योग	आयात
2010-11	19843	17080	8242	45165	38	44
2011-12	34142	15285	6677	56104	27	61
2012-13	51055	12891	7573	71519	18	71
2013-14 (वार्षिकीकृत)	52589	15748	8088	76425	21	69

(ग) बिक्री के स्तर में परिवर्तन:—यद्यपि विगत वर्ष 2012-13 की तुलना में वर्ष 2013-14 (वार्षिकीकृत) में घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि हुई तथापि इसमें जो वर्ष 2010-11 में 17080 मी.टन थी वह वर्ष 2013-14 (वार्षिकीकृत) में कम होकर 15748 मी.टन रह गयी। बिक्री में यह गिरावट इस तथ्य के बावजूद आई कि इसकी मांग जो वर्ष 2010-11 में 45165 मी.टन थी, वर्ष 2013-14 (वार्षिकीकृत) में बढ़कर 76425 मी.टन हो गई। यह स्पष्टतः पता चलता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री में और बाजार हिस्से में बढ़ते हुए आयातों के कारण गिरावट आई।

(घ) लाभ/हानि:—घरेलू उद्योग की लाभप्रदायक में ऐसी स्थिति तक गिरावट आई कि घरेलू उद्योग को अब वित्तीय घाटा हो रहा है। यह निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है:—

वित्त वर्ष	लाभप्रदायकता (रुपये/मी.टन) (सूचीबद्ध)
2010-11	100
2011-12	-266
2012-13	-2796
2013-14(दिसम्बर, 2013 तक)	-1696

8. उत्पादकता:— वर्ष 2010-11 से वर्ष 2012-13 तक की अवधि के दौरान तुलनात्मक रूप से उत्पादकता में गिरावट आई है और वर्ष 2013-14 (वार्षिकीकृत) में अनुक्रमणिका आधार पर वृद्धि हुई है।

2010-11	2011-12	2012-13	2013-14(दिसम्बर, 2013 तक)	2013-14 (वार्षिकीकृत)
(अनुक्रमित) 100	66	83	89	119

9. घरेलू उद्योग ने अपने आवेदन में तीन वर्षों की अवधि के लिए रक्षोपाय शुल्क तत्काल अधिरोपित करने का अनुरोध किया है। घरेलू उद्योग में इस विचाराधीन उत्पाद के बढ़ते हुए आयातों के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में भारी गिरावट के ध्यान में रखते हुए अनंतिम रक्षोपाय शुल्क तत्काल अधिरोपित करने का अनुरोध भी किया है।
10. इस आवेदन की जांच की गई है और यह पाया गया है कि इस विचाराधीन उत्पाद के सम्बन्धित आयातों ने इस विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उत्पादकों को गंभीर क्षति कारित की है और गंभीर क्षति कारित करने की चुनौती उत्पन्न कर दी है और आयातों, में इस वृद्धि उद्योग को अपूरणीय नुकसान पहुंचाया है और तदनुसार यह निश्चय किया गया कि इस नोटिस के माध्यम से जांच प्रारंभ की जाए।
11. सभी हितबद्ध पक्षकार इस नोटिस की तारीख से 20 दिन की अवधि के अंदर अपने विचार निम्नलिखित को प्रेषित कर सकते हैं:

महानिदेशक (रक्षोपाय)
भाई वीर सिंह साहित्य, द्वितीय तल
भाई वीर सिंह भवन, गोल मार्केट
नई दिल्ली-110001, भारत
टेलीफेक्स:- 011-23741542/ 23741537
e-mail : dgsafeguards@nic.in

12. सभी हितबद्ध पक्षकारों को अलग से भी पत्र प्रेषित किया जा रहा है।
13. इस जांच से सम्बंधित कोई अन्य पक्षकार जो यह चाहता है कि उसे हितबद्ध पक्षकार के रूप में माना जाए यह अपना अनुमोदन इस तरह प्रस्तुत कर सकता है जिससे कि वह महानिदेशक (रक्षोपाय) के पास उपर्युक्त पते पर इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 21 दिनों के अंदर पहुंच जाए।
14. सीमाशुल्क प्रशुल्क (रक्षोपाय शुल्क की पहचान आकलन) नियमावली, 1997 के नियम 6(7) में उल्लिखित शर्तों के अनुसार कोई भी हितबद्ध पक्षकार इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 30 दिनों की अवधि की समाप्ति के पश्चात् अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय पाठ युक्त सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण कर सकता है।

[फा. सं. डी-22011/26/2013]

आर. के. सिंगला, महानिदेशक

DIRECTORATE GENERAL OF SAFEGUARDS
CUSTOMS AND CENTRAL EXCISE
NOTICE OF INITIATION OF A SAFEGUARD INVESTIGATION
New Delhi, the 13th February, 2014

[Under Rule 6 of the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997]

Sub: Initiation of safeguard investigation concerning imports of Saturated Fatty Alcohols with carbon chain length of C8,C10,C12,C14,C16, and C18 including single, blends and unblended (Not including branched isomers) which includes blends a combination of carbon chain lengths, C12-C14, C12-C16, C12-C18 and C14-C16 (commonly categorized as C12-C14)(referred to as 'PUC') into India.

G.S.R. 87(E).—An application has been filed before me under Rule 5 of the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 by M/s. VVF (India) Limited, Mumbai, 100% Export Oriented Unit through his consultant M/S TLC Legal Advocates, New Delhi for imposition of Safeguard Duty on imports of “Saturated Fatty Alcohols with carbon chain length of C8,C10,C12,C14,C16, and C18 including single, blends and unblended (Not including branched isomers) which includes blends a combination of carbon chain lengths, C12-C14, C12-C16, C12-C18 and C14-C16 (commonly categorized as C12-C14) ” **hereinafter referred to as ‘PUC’ (Product under consideration)** into India to protect the domestic producers of ‘PUC’ against serious injury/threat of serious injury caused by the increased imports of ‘PUC’ into India. The ‘PUC’ is being imported falling under sub-heading 38237010, 38237020, 38237040, 38237090 and 29051700 of the Customs Tariff Act 1975. The classification is however indicative only and in no way binding on the scope of the present investigations.

2. Domestic Industry: M/s. VVF (India) Limited, Mumbai, claimed that his production account for 63% of the total production of ‘PUC’ in the country & represent a major proportion of the Indian production of ‘PUC’ in the country and thus have the standing to file the present petition. Apart from the applicant, the subject goods are being produced by M/s. Godrej Industries Ltd. Mumbai (Supporter) in this case.

3. Product Involved: Fatty Alcohols are an aliphatic alcohols and occur in saturated and unsaturated forms. The alcohols can be grouped and most common lengths are C12, C14

and blends thereof. The ‘PUC’ are produced by the reduction of methyl ester or wax ester, through the conversion of natural fats and oils, mostly coconut and palm kernel oil. The process starts with splitting of vegetable oils, such as Crude Palm Kernel Oil, at high temperature and pressure, as a continuous process. The vegetable oils/fats (non-edible) are basically triglycerides of fatty acids which get converted to fatty acids and glycerol by the hydrolysis reaction commonly known as fat splitting. The crude fatty acids are then subjected to plain/ fractional distillation, at a high temperature and vacuum, followed by esterification resulting from a reaction between fatty acid and fatty alcohol in an inert atmosphere to make wax- ester. Pure wax- ester is then subjected for hydrogenation which takes place in the presence of fixed bed copper catalyst, resulting in crude fatty alcohol. This is then distilled and purified. ‘PUC’ are sold in the form of flakes, pastilles and liquids.

The ‘PUC’ are mainly used for the manufacture of surfactants, personal care, home care pharmaceutical and agriculture related end application, processing of articles of leather, textile, fur, pulp, paper, petroleum products, fine chemicals, rubber products, plastic and fabricated metal products, include mining, offshore operations, construction work and as solvent and for degreasing purposes. The product is not sold in retail level and is for industrial users.

4. Period of Investigation (POI): The applicant for the purpose of the present application has considered the data for four years period. The applicant has submitted all the data from 2010-11 to 2013-14 (up to Dec.2013). The period for investigation selected is 2010-11 to 2013-14 (Annualised) which is long enough in order to take into consideration the market conditions and to ascertain the need of imposition of Safeguard Duty.

5. Source of Information: The import data for the ‘PUC’ has been taken from IBIS, Mumbai, (Transaction wise) from 2010-11 till December, 2013 and same has been taken into consideration for analysis. The domestic data from 2010-11 to 2013-14 (up to Dec.2013) has been submitted by the domestic industry and the same has been verified by on site visit by the department to the extent deemed necessary and the verified data has been taken into consideration for injury analysis.

6. Increased Imports (Absolute & in relative terms): ‘PUC’ are imported into India from a number of countries, and primarily from Malaysia, Thailand and Indonesia. The imports of ‘PUC’ have shown an increasing trend in absolute terms as well as in relative terms. The imports of ‘PUC’ during the financial year 2010-11 to 2013-14 (Annualised) remained as under:

IMPORTS & TREND

2010-11	2011-12	2012-13	2013-14(up to Dec.13)	2013-14 (Annualised)
19843	34142	51055	39442	52589
100	172	257	198	265

The Imports have increased from 19843MT in 2010-11 to 52589 MT in 2013-14 (Annualised) which shows an increasing trend both in absolute terms as compared to base year and with preceding year i.e. 2012-13 and from base year in relative terms.

6.(a) Imports in relation to Production:

During the period 2010-11 to 2013-14 (Annualised) the market percentage of import in relation to production has increased from 17% to 36% as evident from the following details:

Financial Year	Total Imports (MT)	All India Production (MT)	% of import with respect to production
2010-11	19843	118582	17
2011-12	34142	96344	35
2012-13	51055	112613	45
2013-14 (Annualised)	52589	147701	36

7. Injury: The applicant have claimed that the increased imports of 'PUC' have caused and are threatening to cause serious injury to the domestic producers of 'PUC' as indicated by the following factors:

a) *Production:* The production of the domestic industry declined in 2011-12 as compared to the base year 2010-11, it declined further from 68605 MT in 2010-11 to 67837 MT in 2012-13 but has shown increase in 2013-14 (Annualised).

Year	QTY(MT) (Indexed)
2010-11	68605
2011-12	49585
2012-13	67837
2013-14 (Annualised)	98648

b) *Share of domestic producers in domestic demand:* Market share of domestic producers has fallen significantly. Applicants had a market share of 38% in 2010-11 which fell to 21% during 2013-14 (Annualised). During the same period, The market share of import increased from 44% in 2010-11 to 69% in 2013-14 (Annualised).

Financial Year	Total Import (MT)	Sales of DI (MT)	Sales of other Indian Producers (MT)	Total Demand (MT)	Market Share (%)	
					DI	Import
2010-11	19843	17080	8242	45165	38	44
2011-12	34142	15285	6677	56104	27	61
2012-13	51055	12891	7573	71519	18	71
2013-14 (Annualised)	52589	15748	8088	76425	21	69

c) *Changes in the level of Sales :-* Though the sales of the domestic industry increased in 2013-14 (Annualised) as compared to the preceding year 2012-13, it declined from 17080 MT in 2010-11 to 15748 MT in 2013-14 (Annualised). This decline in sales is despite the fact that the demand increased from 45165 MT in 2010-11 to 76425 MT in 2013-14 (Annualised). This clearly shows that the domestic industry suffered loss in sales and market share caused by increased imports.

d) *Profit/loss* – the profitability of the domestic industry has steeply deteriorated to such a situation that the domestic industry is now suffering financial losses. This is evident from the table below:-

Financial Year	Profitability (Rs. / MT) (Indexed)
2010-11	100
2011-12	-266
2012-13	-2796
2013-14 (up to Dec.13)	-1696

8. **Productivity:** During the period 2010-11 to 2012-13, in comparison, the productivity has decreased and increased in 2013-14 (Annualised) on indexed basis.

2010-11	2011-12	2012-13	2013-14 (up to Dec.13)	2013-14 (Annualised)
(Indexed) 100	66	83	89	119

9. The domestic industry has requested for immediate imposition of safeguard measures for a period of three years in their application. The domestic industry has also requested for imposition of provisional safeguard duty in view of steep deterioration in performance of the domestic industry as a result of increased imports of product under consideration.

10. The application has been examined and it has been found that prima facie increased imports of 'PUC' have caused or are threatening to cause serious injury to the domestic producers of 'PUC' and such increase in imports has caused irreparable damage to the domestic industry and accordingly, it has been decided to initiate an investigation through this notice.

11. All interested parties may make their views known within a period of 30 days from the date of this notice to:

The Director General (Safeguards)
Bhai Vir Singh Sahitya Sadan: 2nd Floor,
Bhai Vir Singh Marg,
Gole Market, New Delhi-110 001, INDIA.
Telefax: 011-23741542/ 23741537
E-mail: dgsafeguards@nic.in

12. All known interested parties are also being addressed separately.

13. Any other party to the investigation who wishes to be considered as an interested party may submit its request so as to reach the Director General (Safeguards) on the aforementioned address within 21 days from the date of this notice.

14. In terms of Rule 6 (7) of Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997, any interested party may inspect the public file containing non-confidential versions of the evidence submitted by the other interested parties after the expiry of 30 days from the date of this notice.

[F. No. D-22011/26/2013]

R. K. SINGLA, Director General